बाइबल टीचर

वर्ष 16 | मई 2019 | अंक 6

सम्पादकीय

यीशु हमारा महायाजक

यीशु मसीह हमारा महायाजक है। आज कई स्थानों पर लोगों को हाई प्रीस्ट बोला जाता है जो कि बाइबल अनुसार अनुचित हैं। इब्रानियों का लेखक कहता है ''सो हे पवित्र भाईयो तुम जो स्वर्गीय बुलाहट में भागी हो, उस प्रेरित और महायाजक यीशु पर जिसे हम अंगीकार करते हैं ध्यान करो। (इब्रा. 3:1)। हम देखते हैं कि पुराने नियम में याजक लोग या अंग्रेजी में जिन्हें प्रीस्ट कहते हैं, वे नियुक्त किये जाते थे। बाइबल हमें बताती है कि मसीहीयत में प्रीस्ट या याजक का क्या महत्व है?

बाइबल का पुराना नियम हमारे लिये आने वाले युग की एक छाया की तरह था। (इब्रा. 8:5)। इसकी असली तस्वीर हमें नये नियम में मिलती है। इब्रा 10:1 में इस प्रकार से लिखा है, ''क्योंकि व्यवस्था जिसमें आने वाली अच्छी वस्तुओं का प्रतिबिम्ब है, पर उनका असली स्वरूप नहीं, इसलिये उन एक ही प्रकार के बलिदानों के द्वारा जो प्रति वर्ष अचूक चढ़ाए जाते हैं, पास आने वालों को कदापि सिद्ध नहीं कर सकती।'' (इब्रा. 10:1)। पौलुस कहता है, ''क्योंकि यह सब आने वाली बातों की छाया है, पर मूल वस्तुएं मसीह की है।'' (कुलु. 2:17)

हमें यह समझना चाहिए कि हमारा महायाजक केवल प्रभु मसीह है। पुराने नियम की बातों को नये नियम की बातों से मिलाकर देखें तो हमें बहुत सी बातें जानने को मिलेगी। हम देखते हैं कि मूसा के काल में परमेश्वर ने लेवियों में से याजकों को बनाया। मूसा के नियम को परमेश्वर ने दिया था तथा नया नियम भी परमेश्वर ने दिया था। परमेश्वर ने यीशु मसीह को महायाजक का पद दिया था। जैसा कि इब्रानियों 5:5 में लिखा है ''वैसे ही मसीह ने भी महायाजक बनने की बड़ाई अपने आप से नहीं ली पर उसको उसी ने दी जिसने उसी से कहा था, कि तू मेरा पुत्र है, आज ही मैंने तुझे जन्माया है।''

मूसा के युग में आराधना करने का तरीका बिलकुल भिन्न था। (निर्गमन 29:42-46)। परन्तु आज जबकि यीशु हमारा महायाजक है, हमारी अराधना का तरीका नये नियम अनुसार है। आज यदि हमें उचित तरह से अराधना करनी है तो हमें नये नियम अनुसार मसीही बनने की आवश्यकता है। हमें मसीह की कलीसिया में होना चाहिए। (मत्ती 16:18, रोमियों 16:16)। बाइबल यह भी कहती है कि प्रत्येक

मसीही एक जीवते मन्दिर की तरह है। (1 कुरि. 6:19-20)।

मूसा के नियम में अर्थात पुराने नियम में पशुओं का बलिदान चढ़ाया जाता था। और यह पापों की क्षमा के लिये होता था, परन्तु इससे उनके पाप क्षमा नहीं होते थे। (निर्गमन 20:24)। आज युग में प्रभु यीशु हमारे लिये क्रूस पर बलिदान होकर हमारे पापों को अपने लोहू के द्वारा साफ करता है। (यशायाह 53:5. प्रेरितों 4:12. इब्रा. 9:13-14)।

मूसा के नियम में परमेश्वर ने हारून को महायाजक बनाया था। वह लेवियो के वंश से था। मूसा उसका भाई था। (निर्गमन 6:16-20)। याजक लोग केवल हारून के वंशज से होते थे। (निर्गमन 29:9)। पुराने नियम में भविष्यवाणियां हुई थी कि यीशु का जन्म यहूदा के घराने से होगा। (यशायाह 11:1-5)। यीशु ने अपना जीवन मूसा के नियम अर्थात पुराने नियम में बिताया था। (गलतियों 4:4)। तथा वह लेवियों के वंश से नहीं था। यीशु को महायाजक बनाया गया इसलिये क्योंकि उसने पूर्ण रूप से परमेश्वर की आज्ञा का पालन किया। प्रेरित पोलुस इसके विषय में लिखता है, ''और मनुष्य के रूप में प्रगट होकर अपने आप को दीन किया और यहां तक आज्ञाकारी रहा, कि मृत्यु हां, क्रूस की मृत्यु भी सह ली। (फिलि. 2:8)। यीशु के विषय में इब्रानियों का लेखक कहता है ''क्योंकि जिस के विषय में यह बातें कही जाती है कि वह दूसरे गोत्र का है, जिसमें से किसी ने वेदी की सेवा नहीं की। तो प्रगट है कि हमारा प्रभु यहूदा के गोत्र में से उदय हुआ है और इस गोत्र के विषय में मूसा ने याजक पद की कुछ चर्चा नहीं की।'' (इब्रा. 7:13-14)।

जब यीशु की क्रूस पर मृत्यु हुई, तब मूसा का नियम समाप्त हो गया था,। जैसे कि लिखा है, ''और विधियों का वह लेख जो हमारे नाम' पर और हमारे विरोध में था मिटा डाला। और उसको क्रूस पर कीलों से जड़कर सामने से हटा दिया (कुलु. 2:14)।

इब्रानियों का लेखक कहता है, ''क्योंकि यदि वह पहली वाचा निर्दोष होती तो दूसरी के लिये अवसर न ढूंढ़ा जाता (इब्रा. 8:7) यीशु मसीह जो हमारा महायाजक है उसने अपनी मृत्यु के द्वारा पुराने नियम को हटाकर नया नियम लगा दिया। यह जो महायाजक है जिसने मृत्यु के बंधनों को तोड़ दिया तथा तीसरे दिन मृत्कों में से जी उठा।'' (इब्रा. 3:1)। वैसे तो बहुत से याजक बनते आये थे और इसका कारण यह था कि मृत्यु उन्हें रहने नहीं, देती थी। पर यह युगानुयुग रहता है; इस कारण उसका याजक पद अटल है। (इब्रा. 7:23-24)।

बाइबल हमें बताती है कि अब प्रत्येक मसीही याजक है (1 पतरस 2:5)। जब पापी लोग सुसमाचार की आज्ञाओं को मानकर बपतिस्मा लेते हैं वे मसीह में आ जाते हैं तथा, उसके वंशज से जुड़ जाते हैं क्योंकि बपतिस्मे के द्वारा हमारा नया जन्म होता है। (यूहन्ना 3:3-5, गल. 3:6-9) तथा गलतियों 3:26-27 को भी पढ़िये।

मूसा के नियम में महायाजक एक पुरुष होता था तथा शारीरिक रूप से वह स्वास्थ्य होता था। (लैव्यवस्था 21:16-23) प्रभु यीशु बिलकुल सिद्ध और निष्पाप था। (इब्रा. 7:26. 9:14 1 पतरस 1:19)। आज लोग बपतिस्मे के द्वारा अपने पापों

को धोकर यीशु में आकर परमेश्वर की संतान बन जाते हैं। (मरकुस 16:16. रोमियों 6:3-4. कुलु. 2:12-13; यीशु मसीह में आकर हम एक याजक बनते हैं तथा यीशु हमारा महायाजक है।

नये नियम तथा पुराने नियम को जब हम मिलाकर देखते हैं तो बहुत सी बातें जानने को मिलती है। हम देखते हैं कि पुराना नियम नये नियम में होने वाली बातों की एक परछाई की तरह था। आज हम यीशु मसीह के नये नियम में रहते हैं। प्रभु यीशु मसीह एक सच्चा हाई प्रीस्ट या महायाजक है। कोई भी व्यक्ति आज प्रभु यीशु की जगह नहीं ले सकता। वह लेवियों द्वारा बने हुए याजकों से बड़ा है।

इब्रानियों का लेखक कहता है, ''सो जब हमारा ऐसा बड़ा महायाजक है, जो स्वर्गों से होकर गया है अर्थात परमेश्वर का पुत्र यीशु तो आओ हम अपने अंगीकार को दृढ़ता से थामे रहें। क्योंकि हमारा ऐसा महायाजक नहीं जो हमारी निर्बलताओं में हमारे साथ दुखी न हो सके, वरन वह सब बातों में हमारी नहीं परखा तो गया तौभी निष्पाप निकला।'' (इब्रा. 4:14-15)।

आज आपके पास यह सुअवसर है कि आप यीशु के पास पूरे हियाव के साथ आ सकते है। बिना किसी झिझक के महायाजक के पास आइये वह आपके पापों को क्षमा करके स्वर्ग में आपको अनन्त जीवन देगा।

परमेश्वर का वचन क्या कहता है?

सनी डेविड

इस पाठ में हम विशेष रूप से उन बातों पर ध्यान देते हैं, जिनका वर्णन हमें बाइबल में मिलता है। हमारा पूरा विश्वास है, कि बाइबल पृथ्वी पर एक ऐसी पुस्तक है जिसमें प्रत्येक बात परमेश्वर की प्रेरिणा से लिखी गई है। इसलिये बाइबल को परमेश्वर की पुस्तक या परमेश्वर के वचन की पुस्तक भी कहा जाता है। यूं तो इस संसार में सदियों से अनेकों पुस्तकें लिखी गई है; और आज भी लिखी जा रही है। और कुछ पुस्तकें बड़ी ही मशहूर भी हो जाती है, और उनके लेखकों को इनाम भी दिये जाते है। पर उनकी प्रसिद्धि कुछ ही समय तक रहती है। एक अच्छी से अच्छी लिखी पुस्तक भी लगभग पच्चीस साल बाद अपनी प्रसिद्धि खो देती है। लेकिन जब हम बाइबल के ऊपर ध्यान करते हैं, तो हम यह देखते हैं कि सैंकड़ों बरसों से इस पुस्तक की प्रसिद्धि हर एक वर्ष बढ़ती ही जा रही है। ऐसा क्यों है? ऐसा इसलिये नहीं है क्योंकि बाइबल एक धर्म की पुस्तक है। पर इसका मुख्य कारण यह बात है, कि बाइबल में परमेश्वर का वचन, परमेश्वर की बातें, परमेश्वर की इच्छा मनुष्यों के लिये लिखी हुई है। सदियों से, इतिहास इस बात का

साक्षी है, अनेकों ऐसे लोग भी हुए हैं, जिन्होंने बाइबल का विरोध किया है, उन्होंने बाइबल की पुस्तकों को जलाया है, उसके मानने वालों पर अत्याचार किए हैं। पर इन सब बातों के होते हुए भी बाइबल की प्रतिष्ठा कम होने के बजाय और अधिक बढ़ी है। बहुत से लोग जो बाइबल में लिखी बातों पर विश्वास नहीं करते थे, आज वे ही बाइबल में लिखी बातों पर चलने का प्रयत्न कर रहे हैं। और इसीलिये बाइबल के पढ़ने वालों की संख्या बढ़ती ही जा रही है। संसार की लगभग सभी भाषाओं में आज बाइबल उपलब्ध है। संसार में हर एक देश में हर एक जगह आज बाइबल पाई जाती है। और लोग बाइबल को प्राप्त करके पढ़ रहे हैं। और यही कारण है, कि पूरे संसार में हर एक वर्ष सबसे अधिक बाइबल की पुस्तकें ही छपती हैं। जब कि मनुष्यों की लिखी पुस्तकों की प्रसिद्धि कुछ ही वर्षों में समाप्त हो जाती है। परमेश्वर के वचन की पुस्तक बाइबल, जगत में हर जगह और भी प्रसिद्ध होती जा रही है। इसलिये, नहीं, कि यह एक धर्म की पुस्तक है, परन्तु इसलिये, क्योंकि यह परमेश्वर के वचन की पुस्तक है। प्रभु यीशु मसीह ने कहा था, कि मनुष्य केवल रोटी ही से नहीं परन्तु हर एक वचन से जीवित रहेगा जो परमेश्वर के मुख से निकलता है। प्रत्येक मनुष्य के भीतर एक अमर आत्मा है। और उस आत्मा की भूख को केवल परमेश्वर का वचन ही पूरा कर सकता है। और वही आत्मिक भूख लोगों को परमेश्वर के वचन की तरफ आकर्षित कर रही है। परन्तु कुछ लोगों को भूख नहीं लगती। क्योंकि उनका स्वास्थ्य सही नहीं होता। वे बीमार होते हैं। उनहें भोजन के नाम से ही, नफरत होती है। ऐसे ही जो लोग परमेश्वर के वचन से नफरत करते हैं, जो इसका नाम तक भी नहीं सुनना चाहते, वे आत्मिक रूप से बीमार है।

परन्तु प्रभु यीशु मसीह ने सिखाया था, कि जिन लोगों के भीतर परमेश्वर के वचन की भूख और प्यास होती है, वे तृप्त किए जाएंगे। इसका अर्थ क्या है? इसका मतलब यह है कि, जो लोग इंसान के लिये परमेश्वर की इच्छा को जानना चाहते हैं, उन्हें परमेश्वर के वचन को पढ़कर संतोष प्राप्त होगा। आज संसार में लाखों और करोड़ों लोग चाहते हैं, कि परमेश्वर वास्तव में कौन है? वे उसके चित्र ओर आकार बनाते हैं, वे उसे किसी न किसी रूप में देखना चाहते है। किन्तु बाइबल में लिखा है, कि परमेश्वर आत्मा है। (यूहन्ना 4:24)। आप आत्मा को कोई रूप नहीं दे सकते। क्या हमारे लिये यही जानना पर्याप्त नहीं है कि परमेश्वर आत्मा है, वह पवित्र आत्मा है?

मनुष्य कौन है? वह इस पृथ्वी पर कहां से आया? और वह कहां जा रहा है? अनेकों लोग इन प्रश्नों के उत्तर जानना चाहते हैं। कुछ लोगों ने अज्ञानता के कारण यह भी मान लिया है, कि मनुष्य का विकास या निकास बंदरों से हुआ है। लेकिन परमेश्वर के वचन की पुस्तक हमें बताती है, कि मनुष्य भी वास्तव में एक आत्मिक प्राणी है। परमेश्वर ने ही आरंभ में मनुष्य को बनाया था। जबकि सारे जगत की सृष्टि परमेश्वर ने ही की है। उसने आरंभ में कहा था और सब कुछ उसकी इच्छा और वचनानुसार उत्पन्न हो गया था। उसने आकाश में चमकने वाली प्रत्येक वस्तु को अपने वचन की सामर्थ से रचा था, जैसे कि हम बाइबल में आरंभ में ही पढ़ते हैं,

और ऐसे ही जो कुछ भी हम आकाश में और पृथ्वी पर और जल के भीतर देखते हैं, उन सब वस्तुओं और प्राणियों को भी परमेश्वर ने अपने वचन की सामर्थ से ही उत्पन्न किया था। किन्तु, मनुष्य को, बाइबल कहती है, परमेश्वर ने अपने स्वरूप पर और अपनी समानता पर बनाया था। मनुष्य के शरीर को परमेश्वर ने मिट्टी से बनाया था, पर उसके भीतर परमेश्वर ने अपने जीवन का श्वास फूंका था। (उत्पत्ति 1:26, 2:7)। मनुष्य परमेश्वर का स्वरूप है, अर्थात आत्मा है। यानि मनुष्य के भीतर परमेश्वर के ही समान एक अमर आत्मा है। इसलिये जिस प्रकार से परमेश्वर सदा से विद्यमान है, ऐसे ही मनुष्य भी आत्मिक रूप से सदा वर्तमान रहेगा। परमेश्वर ने मनुष्य को आरंभ में न केवल अपने स्वरूप पर ही, परन्तु अपने ही समान पवित्र और निष्पाप भी बनाया था। किन्तु मनुष्य ने स्वयं ही पाप करके अपने आपको परमेश्वर की पवित्रता की समानता से नीचे गिरा लिया है। अब वह परमेश्वर के समान पवित्र तो नहीं है। पर उसके स्वरूप पर बना एक आत्मिक प्राणी अवश्य है। अर्थात मनुष्य की आत्मा अविनाश है, और अमर है, और हमेशा विद्यमान रहेगी।

लेकिन मनुष्य कहां जा रहा है? पृथ्वी के जीवन के बाद उसका अनन्त निवास-स्थान कहां होगा? स्वर्ग में तो वह नहीं जा सकता, क्योंकि उसके भीतर पाप है। और स्वर्ग वह स्थान है जहां पाप प्रवेश नहीं कर सकता। क्योंकि वहां परमेश्वर है। और वह पवित्र है। तो फिर मनुष्य कहां जा रहा है? पाप के कारण प्रत्येक मनुष्य नरक में जा रहा है, जो एक भयानक और पीड़ाजनक स्थान है। ''क्योंकि सब ने पाप किया है'', बाइबल में लिखा, ''और परमेश्वर की महिमा से रहित है।'' (रोमियों 3:23)। किन्तु, परमेश्वर का धन्यवाद हो, क्योंकि बाइबल में यह भी लिखा है, कि ''पाप की मजदूरी तो मृत्यु है, परन्तु परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु मसीह यीशु में अनन्त जीवन है।'' (रोमियों 6:23)। अर्थात, परमेश्वर मनुष्य को नरक में जाने से बचाना चाहता है। वह नहीं चाहता है कि मनुष्य नरक में जाए। क्योंकि उसने स्वयं मनुष्य को बनाया है। मनुष्य परमेश्वर की सृष्टि है। इसलिये उसने मनुष्य को जीवन दान दिया है, स्वर्ग में अनन्त जीवन पाने का वरदान दिया है। और स्वर्ग के अनन्त जीवन का वह वरदान प्रभु यीशु मसीह में है।

बाइबल में लिखा है, कि मनुष्य को पाप के कारण नरक में जाने से बचाने के लिये, परमेश्वर ने अपने वचन को एक मनुष्य बनाकर अपने पुत्र के समान पृथ्वी पर भेज दिया था। उसी को, अर्थात मसीह यीशु को परमेश्वर ने मनुष्यों के हाथों से ही मृत्यु दण्ड दिलवाया था। यद्यपि, उसमें बाइबल कहती है, कोई पाप नहीं था, परन्तु फिर भी सारी मानवता के कारण परमेश्वर ने उसे पाप मान लिया था, और उसे एक अपराधी के समान दोषी ठहराकर सजा भी दिलवाई थी। ताकि उसमें होकर, उसके कारण, हर एक इंसान परमेश्वर के लेखे में धर्मी बन जाए, अर्थात पाप की क्षमा पा ले, और स्वर्ग में प्रवेश करने के योग्य बना जाए।

सो, हम प्रभु यीशु मसीह में, जिसके भीतर हमें पापों की क्षमा मिलती है, शामिल कैसे होते हैं? बाइबल में गलतियों की पुस्तक के तीसरे अध्याय में 26 और 27 पदों में यो लिखा हुआ है : ''क्योंकि तुम सब उस विश्वास करने के द्वारा जो

मसीह यीशु पर है, परमेश्वर की संतान हो। और तुम में से जितनों ने मसीह में बपतिस्मा लिया है उन्होंने मसीह को पहन लिया है।'' बाइबल के अनुसार, किन लोगों ने मसीह को पहन लिया है? ''जितनों ने मसीह में बपतिस्मा लिया है। उन्होंने मसीह को पहल लिया है।''

सो आज, पृथ्वी पर कोई भी इंसान यदि कोई एक खास काम कर सकता है, तो वह यही है कि वह अपनी आत्मा को नरक में जाने से बचा सकता है। यह सच है कि, केवल परमेश्वर ही हमारा उद्धार करके हमें पापों से मुक्ति दे सकता है। और यह भी सच है, कि केवल परमेश्वर ही हमें स्वर्ग में अनन्त जीवन दे सकता है। पर यह भी सच है, कि परमेश्वर ने पाप से उद्धार करके हमें मुक्ति देने के लिये, और हमें स्वर्ग में प्रवेश करने के योग्य बनाने के लिये सब कुछ कर दिया है। उसने अपने पुत्र यीशु को क्रूस पर बलिदान करके सारी मानवता के पापों का प्रायश्चित कर दिया है। और अब वह यह चाहता है कि उस उद्धार और मुक्ति और स्वर्ग के अनन्त जीवन को प्राप्त करने के लिये हम में से हर एक उसके पुत्र मसीह में विश्वास लाए, और अपना मन सभी अन्य बातों से फिराकर उसके पुत्र मसीह को पहन लेने के लिये उसमें बपतिस्मा ले। जिसका अर्थ है, पिता और पुत्र और पवित्रात्मा के नाम से जल के भीतर गाड़े जाना और उसमें से बाहर आना। और फिर एक नए इंसान का सा, जो मसीह यीशु में है, एक नया जीवन व्यतीत करना।

परमेश्वर के साथ कार्य करना

जे. सी. चोट

इस लेख में मैं आपसे परमेश्वर के साथ कार्य करने की बात करना चाहता हूं। सबसे पहले हम यह देखते हैं कि स्वर्ग और पृथ्वी की रचना महान परमेश्वर ने की है। भजन संहिता का लेखक कहता है ''आकाश ईश्वर की महिमा वर्णन कर रहा है; और आकाशमण्डल, उसकी हस्तकला को प्रगट कर रहा है।'' (भजन 19:1)। फिर वह 102:25 में कहता है ''आदि में तूने पृथ्वी की नींव डाली, और आकाश तेरे हाथों का बनाया हुआ है।'' इब्रानियों का लेखक कहता है, ''और यह कि, हे प्रभु, आदि में तू ने पृथ्वी की नींव डाली, और स्वर्ग तेरे हाथों की कारीगरी है। वे नाश हो जाएंगे, परन्तु तू बना रहेगा: और वे सब वस्त्र की नाई पुराने हो जाएंगे। और तू उन्हें चादर की नाई लपेटेगा और वे वस्त्र की नाई बदल जाएंगे, पर तू वहीं है और तेरे वर्षों का अन्त न होगा।'' (इब्रा. 1:10-12)।

परमेश्वर ने केवल स्वर्ग और पृथ्वी को ही नहीं बनाया बल्कि मनुष्य की भी रचना की थी। फिर उसने प्राकृति के कुछ नियम बनाये ताकि घास बीज वाले पेड़-पौधे और फलदाई वृक्ष उत्पन्न हो और प्रत्येक अपनी जाति के अनुसार पृथ्वी पर उगे। (उत्पत्ति 1:11)। बाइबल बताती है, ''फिर परमेश्वर ने कहा, पृथ्वी से

एक-एक जाति के जीवित प्राणि, अर्थात घरेलू पशु, और रेंगने वाले जन्तु और पृथ्वी के वनपशु जाति के अनुसार उत्पन्न हो; और वैसा ही हो गया (उत्पत्ति 1:24)।

मनुष्य के विषय में हम पढ़ते हैं, ''परमेश्वर ने मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार उत्पन्न किया, अपने ही स्वरूप के अनुसार परमेश्वर ने उसको उत्पन्न किया नर और नारी करके उसने मनुष्यों की सृष्टि की। और परमेश्वर ने उनको आशिष दी: और उन से कहा फूलो-फलों ओर पृथ्वी में मरे जाओ और उसको अपने वश में कर लो और समुद्र की मछलियों तथा आकाश के पक्षियों और पृथ्वी पर रेंगने वाले सब जन्तुओं पर अधिकार रखो। (उत्पत्ति 1:27-28)।

जो कुछ भी उत्पन्न हुआ उस सबको बनाने में परमेश्वर का हाथ था। परमेश्वर ने हमें बनाया है और अभी भी वह हमारे जीवनों में कार्य कर रहा है। मनुष्य ने आज बहुत उन्नति की है परन्तु बात तो यह है कि मनुष्य को किसने बनाया है? महान परमेश्वर ने बनाया है।''

मनुष्य को बहुत सारे बड़े-बड़े कार्य करने में सफलता मिली है, परन्तु इस सब में परमेश्वर की सहायता बिना कुछ नहीं हो सकता था। परमेश्वर किस प्रकार से मनुष्य के परिश्रम को आशीषित करता है? कई बार मनुष्य सोचता है कि वह बुद्धिमान है, तथा उसे परमेश्वर की कोई आवश्यकता नहीं है। याकूब कहता है, ''क्योंकि मनुष्य का क्रोध परमेश्वर के धर्म का निर्वाह नहीं कर सकता है। (याकूब 1:20)। कुछ लोग केवल होंटों से प्रभु का आदर करते हैं, परन्तु उनके मन उससे बहुत दूर हैं। बाइबल हमें बताती है, ''वे कहते हैं कि हम परमेश्वर को जानते हैं; पर अपने कामों से उसका इंकार करते हैं; क्योंकि वे घृणित और आज्ञा न मानने वाले हैं, और किसी अच्छे काम के योग्य नहीं। (तीतुस 1:16)। प्रेरित पौलुस ने कहा था, यदि कोई कुछ न होने पर भी अपने को कुछ समझता है, तो अपने ही काम को जांच लें और तब दूसरे के विषय में नहीं परन्तु अपने ही विषय में उसको घमण्ड करने का अवसर होगा। (गल; 6:3-4)।

परमेश्वर ने बहुत सारे कार्य किये हैं, सृष्टि की कितनी सुन्दर रचना की है। उसने अपने पुत्र को इस संसार में भेजा ताकि वह अपना बलिदान संसार के सब लोगों के लिये दे सके। फिर उसने अपने लोगों को यह कार्य दिया कि वे सुसमाचार को लेकर पूरे जगत में जायें। यीशु ने अपने चेलों से कहा था, ''तुम सारे जगत में जाकर सारी सृष्टि के लोगों को सुसमाचार प्रचार करो जो विश्वास करें ओर बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा, परन्तु जो विश्वास न करेगा वह दोषी ठहराएगा जायेगा।'' (रोमियों 16:15, 16) केवल उसने प्रचार करने की आज्ञा नहीं दी बल्कि उन्हें यह भी बोला कि वे लोगों को उद्धार पाने की शर्तें भी बतायें। परमेश्वर ने अपना कार्य कर दिया, अब मनुष्य को अपना कार्य करना है। परन्तु यदि कोई व्यक्ति आज्ञा मानने से इंकार कर देता है तब क्या होता है? अपने विश्वास और आज्ञा न मानने के कारण वह अपने पापों में खो जाएगा। जब कोई व्यक्ति पूरे मन से परमेश्वर में विश्वास करता है तब वह उन सब अज्ञाओं को मानेगा जो प्रभु उससे करने के लिये कहता है। जिस प्रकार से हम प्रेरितों के 8 अध्याय में खोजे के बारे में पढ़ते हैं। अब शायद

कोई यह भी कह सकता है कि, ''उद्धार तो केवल अनुग्रह से मितला है और हम अपने आप से इसके लिये कुछ नहीं कर सकते। (इफि. 2:8, 9; तीतुस 3:5)। परन्तु कोई शायद यह सोचे कि प्रभु में केवल विश्वास करके अपने उद्धार को कमा सकता है तो यह गलत है।

आज प्रभु को ऐसे लोगों की आवश्यकता है जो कार्य कर सकें। उसके सुसमाचार को आगे ले जा सके। उसके सुसमाचार को अधिक से अधिक स्थानों पर ले जा सके। प्रेरित पौलूस ने कहा था, ''और हम जो उसके सहकर्मी है, यह भी समझाते हैं, कि परमेश्वर का अनुग्रह जो तुम पर हुआ व्यर्थ न रहने दो। (2 कुरि. 6:1)। फिर हम पढ़ते हैं कि प्रेरित तीमोथी प्रचारक से पौलूस ने कहा था, ''अपने आप को परमेश्वर का ग्रहण योग्य और ऐसा काम करने वाला ठहराने का प्रयत्न कर जो लज्जित होने न पाए और जो सत्य के वचन को ठीक रीति से काम में लाता हो। (2 तीमु. 2:15)। पौलुस कहता है, ''क्योंकि हम उसके बनाए हुए हैं; और मसीह यीशु में उन भले कामों के लिये सृजे गए जिनहें परमेश्वर ने पहले से हमारे करने के लिये तैयार किया। (इफि. 2:10) यीशु के लिये कार्य करने का अर्थ है, उसकी कलीसिया में होना। हमें यह जानना चाहिए कि यीशु हमारा प्रभु है तथा हम उसके दास हैं। यदि हम ईमानदारी से उसका कार्य करगें तो वह हमें आशीषित करेगा।

परमेश्वर आपके जीवन को लेकर एक अच्छा जीवन बना सकता है। यह तभी संभव हो सकता है जब हम उसकी इच्छानुसार चलते हैं। परमेश्वर हमें बहुत बड़े कार्य करने वाला बना सकता है।

प्रेरित पौलुस कहता है, ''और हम जानते हैं कि जो लोग परमेश्वर से प्रेम रखते हैं उनके लिये सब बातें, मिलकर भलाई ही को उत्पन्न करती है; अर्थात उनके लिये जो उस की इच्छा अनुसार बुलाए हुए हैं। (रोमियों 8:28)। फिर आगे वह कहता है, ''सो हम इन बातों के विषय में क्या कहें? यदि परमेश्वर हमारी ओर है, तो हमारा विरोधी कौन हो सकता है? जिसने अपने निज पुत्र को भी न रख छोड़ा परन्तु उसे हम सब के लिये दे दिया वह उसके साथ हमें और सब कुछ क्यों कर ना देगा? (रोमियों 8:31-32)। पौलुस ने मसीहीयों से कहा था, ''जो मुझे सामर्थ देता है उस में सब कुछ कर सकता हूं।'' (फिलि. 4:13) प्रिये मित्रो, आइये परमेश्वर के लिये कार्य करें। उसके लिये फल लाये।

आजीवन लिखित गारंटी

बैटी बर्टन चोट

हम लोग हमेशा उन चीजों को जिन पर हमारा अधिकार है खराब होने पर उनको बदलने का लिखित आश्वासन चाहते हैं। वह लिखित कागज हमको एक सुरक्षित और चिंता मुक्त स्थिति में रखता है, बशर्ते कि उस कंपनी द्वारा बनाई हुई वस्तु उच्च स्तर की हो और कंपनी का बाजार में अच्छा नाम हो।

अगर एक नई कॉफी बनाने का यंत्र ज्यादा दिन नहीं चलता, तो वह कोई बड़ी बात नहीं है। यदि एक कपड़े धोने की मशीन अपनी लिखित वायदे की हुई मियाद समाप्त होने के बाद काम करना बंद करदे तो यह बात चुभती है, परन्तु हम अपने महीने के बजट पर बगैर बोझ डाले एक नई मशीन खरीदने का प्रबंध कर सकते हैं। यदि हमें तुरन्त मोटर साईकिल या कार आदि बदलनी पड़े तो उसके लिये काफी समय तक रूकना पड़ेगा और वह एक अत्यंत दुखदायी साबित होगा। परन्तु यदि हम बीते वर्षों की इन भौतिक वस्तुओं की चुनौतियों पर गौर करें तो पता चलेगा कि किस तरह कठिन परिस्थितियों का मुकाबला करते हुए हम जीवित हैं और उनको पीछे छोड़ते हुए आगे बढ़ते जा रहे हैं।

तौ भी ऐसा नहीं है कि संसार में हम केवल अपने आप को इन डराने वाली भौतिक चीजों की बड़ी चुनौतियों से ही असुरक्षित समझें, इस जीवन में भी जिस रास्ते पर हम सफर कर रहे हैं उस पर अनदेखे संकट और परीक्षाएं छिपकर हम पर हमला करती रहती है।

वह लिखित आश्वासन कहां है जो हमें भरोसा दिलाए और सुरक्षा प्रदान करे कि हमारी आत्मा सही सलामत है और परमेश्वर के सामने पूरी तरह से ग्रहण योग्य है।

परमेश्वर अपने हर बच्चे को आजीवन आश्वासन व सुरक्षा प्रदान करता है। यह सत्य है और हमें इसको स्वीकार करना चाहिए, फार्म भरें और भेज दें परन्तु परमेश्वर ने तो अपना काम कर दिया। क्या इस ''आजीवन सुरक्षा'' का कोई लाभ है? तीतुस की पत्री उसके 1:2 में साफ भाषा में लिखा है, ''उस अनन्त जीवन की आशा पर जिसकी प्रतिज्ञा परमेश्वर ने, जो झूठ बोले नहीं सकता सनातन से की है।'' अत: आजीवन आश्वासन'' ऐसा है ''जैसे आपने लोहे के वस्त्र पहन रखे हो पूरी तरह से सुरक्षित हैं।

इस समझौते का हमारा हिस्सा क्या है?

पहला: यह इकरार नामा केवल परमेश्वर और उसके बच्चों के बीच है। अत: ऐसा विश्वासी जिसने बपतिस्मा ले रखा हो, परमेश्वर की कलीसिया का सदस्य हो तभी वह इस समझौते तक पहुंच सकता है।

दूसरा: अगरचि आपको पूरी सुरक्षा वे ''आजीवन आश्वासन'' प्राप्त है तो भी आपको पूरे तरीके से अपना तन, मन, जीवन और हर वह चीज जिस पर आपका अधिकार है यानी हर चीज परमेश्वर को समर्पित करनी है। परमेश्वर उस चीज की जिम्मेदारी नहीं ले सकता जिसने आपने को उसको नहीं सौंपा।

इस तरह का समर्पण ऐसी बार-बार करने वाली प्रार्थना से व्यक्त होता है; ''पिता मैं जो कुछ भी हूं और जो कुछ मेरा है, वह सब तेरा है। अपनी इच्छानुसार आज ही मेरे विचारों, मेरी सामर्थ और मेरे समय का अच्छे से अच्छा इस्तेमाल करे। कृपया इतना होने दे कि मैं किसी भी तरह आपके काम में अड़चन न बनूं।''

अब आप परमेश्वर की सहभागिता में आ गए और अब आपकी देखभाल उसकी जिम्मेदारी है। इस आश्वासन के लिए इन पदों से अपने भरोसे को प्रकट कर सकते हैं, ''इस कारण मैं इन दुखों को भी उठाता हूं, पर लजाता नहीं क्योंकि मैं उसे जिस

पर मैंने विश्वास किया है जानता हूं; और मुझे निश्चय है कि वह मेरी धरोहर की उस दिन तक रखवाली कर सकता है।'' (2 तीमुथियुस 1:12)।

परमेश्वर का आश्वासन क्या कहता है?

''....और देखो, मैं जगत के अंत तक सदा तुम्हारे संग हूं।'' (मत्ती 28:20)।

''.... और जो कुछ तुम मेरे नाम से मांगोगे, वही मैं करूंगा.....'' (यूहन्ना 14:13)।

''मैं तुम्हें अनाथ नहीं छोडूंगा; मैं तुम्हारे पास आता हूं।'' (यूहन्ना 14:18)।

''यीशु ने उसको उत्तर दिया, यदि कोई मुझसे प्रेम रखेगा तो वह मेरे वचन को मानेगा, और मेरा पिता उससे प्रेम रखेगा और हम उसके पास आएंगे और उसके साथ वास करेंगे।'' (यूहन्ना 14:23)।

''और हमें उसके सामने जो हियाव होता है, वह यह है; कि यदि हम उसकी इच्छा के अनुसार कुछ मांगते हैं, तो हमारी सुनता है। जब हम जानते हैं कि जो कुछ हम मांगते हैं वह हमारी सुनता है। तो यह भी जानते हैं कि जो कुछ हमने उससे मांगा, वह पाया है (''पाया है'' - इतनी जल्दी, यह हमारा है) हमारा अनुरोध जो भी हमने, उससे मांगा।''

''परमेश्वर सब प्रकार का अनुग्रह तुम्हें बहुतायत से दे सकता है जिससे हर बात में और हर समय सब कुछ, जो तुम्हें आवश्यक हो, तुम्हारे पास रहे और हर एक भले काम के लिये तुम्हारे पास बहुत कुछ हो।'' (2 कुरिन्थियों 9:8)।

यह कथन एक पक्की दलील है: परमेश्वर प्रतिज्ञा करता है:

हमेशा: परमेश्वर किसी भी स्थिति और किसी भी अवसर पर कभी असफल नहीं होगा।

पर्याप्त मात्रा में: (जितना आवश्यक हो उतना)

पूरा आश्वासन हर उस चीज की हमको आवश्यकता है परमेश्वर पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध कराता है। यह सत्य है कि कभी-कभी भविष्य की ओर देखते हुए हमें ऐसा लगने लगे कि हमारे पास पर्याप्त पैसा, समय या स्वयं का स्वभाव नहीं है कि किसी चुनौती का सामना कर सके पर ऐसे में विश्वास से आगे बढ़ते जाएं। परमेश्वर ने प्रतिज्ञा की है और उसका विस्तार से ब्यौरा तैयार करना उसकी जिम्मेदारी है।

(कभी-कभी परमेश्वर हमें सावधान करता है जब वह देखता है कि हम उन दरवाजे से जाने की कोशिश कर रहे हैं जिसको उसने बंद कर दिया है- वह पर्याप्त मात्रा में हमें देना नहीं चाहता जिसकी हमने आशा की है। यदि उसकी इच्छा होगी तो दरवाजा खुला होगा और पर्याप्त मात्रा उपलब्ध होगी।)

सब चीजों में: अनेक बार हम स्वयं नहीं जानते हमें किस चीज की आवश्यकता है, परन्तु परमेश्वर अच्छी तरह से जानता है और वह आश्वासन देता है कि हमें किसी चीज की कमी नहीं होगी।

बहुत बड़ी मात्रा में: हमें विश्वास से संघर्ष करते हुए देखकर वह अपनी प्रतिज्ञा को दोहराता है।

हर अच्छे कार्य के लिये: यहां एक और परिस्थिति है जिसका हमें सामना करना

है; हमारा सारा ध्यान और लक्ष्य अच्छे कामों को शामिल करना होना चाहिए जिससे एक अच्छा मसीही जीवन बन सके।

परमेश्वर ने हमारे शरीर का निर्माण किया है, इसलिए उसे पता है कि हमें भोजन चाहिए हमें व्यायाम करना चाहिए, हमें आराम करना चाहिए और हमें सहभागिता करनी चाहिए पर यह सब हमारे मुख्य उद्देश्य की तुलना में महत्वपूर्ण नहीं है। हमारा सारा ध्यान परमेश्वर के साथ काम करने में होना चाहिए। तब तक शारीरिक सुख प्रदान करने वाले पिता की तरह जो वह है, अपनी गोद में बैठा कर कोमलता से कहता है, ''किसी भी बात की चिंता मत करो; परन्तु हर एक बात में तुम्हारे निवेदन, प्रार्थना और विनती के द्वारा धन्यवाद के साथ परमेश्वर के सम्मुख उपस्थित किए जाएं। तब परमेश्वर की शांति, जो सारी समझ से परे है, तुम्हारे हृदय और तुम्हारे विचारों को मसीह यीशु में सुरक्षित रखेगी।

इसलिये हे भाईयो जो जो बातें सत्य हैं, और जो - जो बातें आदर्णीय है, और जो-जो बातें उचित हैं, और जो-जो बातें पवित्र हैं, और जो-जो बातें सुहावनी हैं और जो-जो बातें मनभावनी हैं, अर्थात जो भी सदगुण और प्रशंसा की बातें हैं उन पर ध्यान लगाया करो।'' (फिलिप्पियों 4:6-8)।

और वह हमारी आंखों में आंखे डालकर उन समस्याओं के बारे में, जिनको हम घटित होने से नहीं रोक सकते और जिनका हमें सामना करना पड़ेगा कहता है : ''मेरा अनुग्रह तेरे लिये बहुत है; क्योंकि मेरी सामर्थ निर्बलता में सिद्ध होती है।''

और हम आभार प्रकट करते हुए आत्मविश्वास के साथ उत्तर देते हैं कि हम चुनौतियों के लिये धन्यवादित होंगे, क्योंकि यह वह समय होता है जब हम उस सामर्थ को प्राप्त करते हैं जो हमारा भाई मसीह उपलब्ध कराता है, ''इसलिए मैं बड़े आनन्द में अपनी निर्बलताओं पर घमण्ड करूंगा, और मसीह के लिये निंदाओं में और दरिद्रता में, और उपद्रवों में और संकटों में प्रसन्न हूं; क्योंकि जब में निर्बल होता हूं, तभी बलवन्त होता हूं।'' (2 कुरिन्थियों 2:9, 10)।

और उन अवसरों पर जब शैतान अपनी सब से बुरी स्थिति में होता है कि हमको पीड़ित करे तब परमेश्वर झपट कर हमें खींचता है और अपने सीने से लगा लेता है, ओर कहता है, ''क्या यह हो सकता है कि कोई माता अपने दूध पीते बच्चे को भूल जाए और अपने जन्माए हुए लड़के पर दया न करे? हां वह तो भूल सकती है, परन्तु मैं तुझे नहीं भूल सकता। मैंने तेरा चित्र अपनी हथेलियों पर खोदकर बनाया है.....'' (यशायाह 49:15, 16)।

तब वह मुझे अपनी गोदी से नीचे उतारकर अपने काम के लिये भेजेगा और जैसे ही मैं मुड़ता हूं तो बहुत ही आनन्द भरा और सुन्दर गीत सुनाता हूं।

''तेरा परमेश्वर यहोवा तेरे बीच में है, वह उद्धार करने में पराक्रमी है, वह तेरे कारण आनन्द से मगन होगा, वह अपने प्रेम के मारे चुपका रहेगा; फिर ऊंचे स्वर से गाता हुआ तेरे कारण मगन होगा।'' (सपन्याह 3:17)।

कितना मनमोहक आश्वासन है।

-अनुवादकः भाई फ़ैरल

मसीह से रिश्ता

(यूहन्ना 15:1-11)

कोय रोपर

मसीह के साथ हमारे निकट संबंध का उद्देश्य: हम मसीह के निकट क्यों है? अपनी निकटता या अपनी आत्मिकता पर शेखी मारने के योग्य होने के लिए? उस संबंध में उसे किसी के साथ न बांटने की मंशा से रंगरलियां मनाने के लिए? नहीं। यह वचन हमें सिखाता है कि हमारे जुड़ने का मकसद फल लाना है। अंगूर की बेल की टहनी होने का क्या उद्देश्य है? अंगूर की टहनी किस लिए होती है? अंगूर लगने के लिए जैसे कपास की डंडी का पौधे से जुड़े रहना कपास उपजाने के लिए और आड़ू के पेड़ पर शाखा का होना आड़ू लगने के लिए होता है। यदि हम फल नहीं लाते तो हम अपना उद्देश्य पूरा नहीं करते हैं।

यह वचन से उससे अधिक कहलवाना हो सकता है जो यह कहना चाहता है, परन्तु कम से कम यह ध्यान देना दिलचस्प है दाखलता और डालियों में पारस्परिक संबंध है। दाखलता डालियों के लिए भोजन और आहार अर्थात जल और पोषक तत्व उपलब्ध कराती है। परन्तु दाखलता अपने आप फल नहीं दे सकती। यदि हम पौधे के उद्देश्य पर विचार करें तो उसका उद्देश्य बिना टहनियों के पूरा नहीं हो सकता। आत्मिक दाखलता और टहनियों में भी यही है: (1) दाख से ही जीवन मिलता है। (2) आहार दाखलता से मिलता है। पर बिना हमारे यीशु संसार में उस सब को पूरा नहीं कर सकता जो वह करना चाहता है। उदाहरण के लिए वह खोए हुए को ढूंढ़ने और उनका उद्धार करने के लिए आया, परन्तु बिना हमारे सहयोग यानी हमारे सुसमाचार को सुनाए वह खोए हुओं का उद्धार नहीं कर सकता।

फल लाना हमारी जिम्मेदारी है, इस कारण हमें पूछना चाहिए कि हम क्या फल लाएं? इसके कई संभावित उत्तर हैं। नया नियम "आत्मा के फल" (गलातियों 5:22, 23), और "ज्योति का फल" (इफिसियों 5:9), और "धार्मिकता का फल" (फिलिप्पियों 1:11; याकूब 3:18) की बात करता है।

यूहन्ना 15 की एक और व्याख्या है कि हम दूसरों को अपने जैसे बनाएं। यह अन्य वचनों के साथ मेल खाता भी है जो मसीह के लिए फल लाने के लिए दूसरों को परिवर्तित करने का सुझाव देते हैं (देखें रोमियों 1:13; फिलिप्पियों 1:22; 4:17)। निश्चित रूप से हम इन वचनों को हठ धार्मिकता से या यूं कहें कि यदि हम दूसरों को मसीह में परिवर्तित करने की इच्छा नहीं रखते अर्थात फल नहीं लाते तो हमें "डाली की नाई फेंक दिया जाएगा" और "आग में झोंक" दिया जाएगा और हम "जल" जाएंगे (यूहन्ना 15:6)। अभी भी हम कह सकते हैं कि जहां तक हो सके, अवसर मिलने पर हमें दूसरों को मसीह में लाने के लिए पूरी कोशिश करने की आवश्यकता है। कहने का अर्थ यह है कि प्रभु हम से केवल "अच्छा" बनने की अपेक्षा नहीं रखता। हम "अच्छे" हो सकते हैं, परन्तु "किसी काम के नहीं" हो सकते। मसीह में हमारे बने रहने का पता हमें और दूसरों को लगना चाहिए।

परन्तु यह भी ध्यान दिया जाना चाहिए कि यीशु हम से केवल थोड़ा सा फल लाने की इच्छा नहीं करता। इस वचन में फल लाने के चार दर्जों पर ध्यान दें: (1) बिना फल के, "जो डाली मुझ में है और नहीं फलती, उसे वह काट डालता है... ." (आयत 2)। (2) फल, "...और जो फलती है, उसे वह छांटता है,..." (आयत 2)। (3) और फल, "....ताकि और फले..." (आयत 5)। (4) बहुत फल, "जो मुझ में बना रहता और मैं उसमें, वह बहुत फल लाता है" (आयत 5), "मेरे पिता की महिमा इसी से होती है, कि तुम बहुत सा फल लाओ, तब ही तुम मेरे चेले ठहरोगे" (आयत 8)। आप इस पैमाने पर कहां है? जब तक हम "चौथे दर्जे" तक पहुंचने के लिए अपनी पूरी कोशिश नहीं करते तब तक प्रभु पूरी तरह से संतुष्ट नहीं होता।

प्रभु हमें और फल लाने के योग्य कैसे बनाता है? यूहन्ना 15:2 कहता है, "जो फलती है, उसे छांटता है ताकि और फले।" इसे छांटना कष्टदायक हो सकता है। कुछ बातें जो आपके साथ घटी है हो सकता है कि वह आप को "छांटने" का परमेश्वर का ढंग हो ताकि आप और फल ला सकें। हानि, बिमारी, निराशा ये सब आपको और फलदायक होने में आपकी सहायता के लिए परमेश्वर का ढंग हो सकता है।

मसीह के साथ निकटता से जुड़ होने का हमारा परिणाम: यदि हम "मसीह में बने रहते" हैं तो इसका परिणाम क्या होगा (1) यीशु कहता है कि हम बहुत फल लाएंगे (15:5)। (2) हमें जो चाहिए मांगने पर मिल जाएगा, "यदि तुम मुझ में बने रहो, और मेरी बातें तुम में बनी रहें तो जो चाहो मांगो और वह तुम्हारे लिए हो जाएगा" (यूहन्ना 15:7)। (3) परमेश्वर की महिमा होगी, "मेरे पिता की महिमा इसी से होती है, कि तुम बहुत सा फल लाओ, तब ही तुम मेरे चेले ठहरोगे" (यूहन्ना 15:8)। (4) हम मसीह के प्रेम में बने रहेंगे (यूहन्ना 15:10)। मसीह सबसे प्रेम करता है, परन्तु जो मसीह की आज्ञाओं को मानते और उसकी नजदीकी में बने रहते हैं वे उसके प्रेम का लाभ उठाते रहते हैं। (5) हमारा आनन्द पूरा हो जाएगा। यीशु इस वचन को यह कहते हुए समाप्त करता है, "मैंने ये बातें तुम से इसलिए कही हैं, कि मेरा आनन्द तुम में बना रहे, और तुम्हारा आनन्द पूरा हो जाए" (यूहन्ना 15:11)। यीशु कहता है कि हम प्रसन्न कैसे रह सकते हैं? मसीह के साथ अपना संबंध बनाए रखकर। यदि हम मसीह की नजदीकी में बने रहें, तो हम फलदायक होंगे, हम जो चाहेंगे मिल जाएगा, हम परमेश्वर की महिमा करेंगे, हम मसीह के प्रेम में बने रहेंगे, और हम आनन्द से भरे होंगे। हो सकता है जब मसीह के साथ अपनी निकट संबंध को बनाए रखने में असफल रहें तो हम आत्मिक रूप में निराशा महसूस करें।

मैं चकित होता हूं

माइकल एल. किंग

थॉमसन नामक एक व्यक्ति ने यह सर्वेक्षण किया है कि समय ''दो अनंतकालों की चोटियों के बीच एक छोटा सा दर्रा'' सृष्टि वह पल है जिसमें अनंतकाल ने समय

को स्पर्श किया है। विचार को बढ़ावा दिया गया है कि यीशु का आगमन एक और अवसर है जब अनंतकाल ने समय पर हमला किया। अनंतकाल बढ़ाया हुआ समय नहीं बल्कि इसके बजाय समयहीन है।

परमेश्वर असीम है और उसके अपने अपरिवर्तनीय स्वभाव के बिना उसे कोई और सीमा बांध नहीं सकती। क्योंकि वह ''आज और कल और युगानुयग ''आज और कल और युगानुयग एक सा है'' (इब्रानियों 13:8)। परमेश्वर को समय की परवाह नहीं है क्योंकि वह ''समय की सब सीमाओं से ऊपर है।'' इसलिए इस तथ्य को मानना कठिन नहीं है कि परमेश्वर के लिए ''एक दिन हजार वर्ष के बराबर है और हजार वर्ष एक दिन के बराबर है'' (2 पतरस 3:8)। परमेश्वर, मसीह और पवित्र आत्मा वे अनन्त जीव है जिन्हें लेख में ऊपर ''पहाड़ की चोटियां'' बताया गया है। मनुष्यजाति तराई के लोग होने के कारण ''तंग दर्रे'' में रहने के कारण, सीमाओं से बंधे है। यहां पर हम सीमित को असीम से अलग देखते हैं। समय, शक्ति, ज्ञान, उपस्थिति आदि के संबंध में असीम की कोई सीमा नहीं है। हम परमेश्वर के ''सर्व-गुणों'' जैसे सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञानी और सर्व-व्यापक होने की बात करते हैं। परन्तु दूसरी ओर मनुष्य सीमित है और सीमाओं से घिरा है। पौलुस ने परमेश्वर द्वारा ठहराई ''निवास की सीमाओं को बांधने'' की बात की (प्रेरितों 17:26)। हम सीमाओं से आगे नहीं बढ़ सकते और उन योग्यताओं को नहीं पा सकते यानी ''मनुष्यों से तो यह नहीं हो सकता परन्तु परमेश्वर से सब कुछ हो सकता है'' (मत्ती 19:26)। इस वचन में यीशु उद्धार की बात कर रहा था।

मूसा ने उसे ''अनादि परमेश्वर'' कहा (व्यवस्थाविवरण 23:27), यशायाह ने घोषणा की कि वह ''सनातन परमेश्वर है'' (यशायाह 40:28) और यिर्मयाह ने कहा कि वह ''सदा का राजा है'' (यिर्मयाह 10:10)। यूहन्ना ने यह प्रगट किया कि परमेश्वर सब वस्तुओं का सजृनहार है (यूहन्ना 1:1-3) और मूसा कहता है कि वह ''अनादिकाल से अनंतकाल तक'' है (भजन 90:2)।

मसीह से सीमित और अस्थाई से असीमित और अनन्त में बदलने के लिए, तराई के लोगों की सहायता के लिए ''तंग दर्रे में आने के लिए पहाड़ की चोटी'' को छोड़ दिया। पौलुस ने बातया कि यह बदलाव इसलिए होगा क्योंकि यीशु पृथ्वी पर आया (फिलिप्पियों 3:20, 21, 1 कुरिन्थियों 15:51-58)। यूहन्ना के अनुसार पृथ्वी पर यीशु का उद्देश्य बलिदान के रूप में परमेश्वर के प्रेम को दिखाना था कि सीमित मनुष्य ''सदा तक रहने वाला'' बन सकता है जो कि यह कहने का यानी ''असीम के साथ सांझा करने'' का एक और ढंग है, जहां समय और सीमाओं को हटा दिया गया है और मनुष्य परमेश्वरत्व के उस व्यक्ति की तरह ''पहाड़ की चोटी'' बनने के लिए समय और कब्र पर जय पा लेता है।

''जो मुझे सामर्थ देता है उसमें सब कुछ करने'' (फिलिप्पियों 4:13) या ''हम उसके द्वारा जिसने हमसे प्रेम किया है जयवंत से भी बढ़कर है'' (रोमियों 8:37), और परमेश्वर को धन्यवाद दें ''जो हमारे प्रभु यीशु मसीह द्वारा हमें जयवंत करता है'' (1 कुरिन्थियों 15:57) मसीही व्यक्ति के सामने परेशानियां क्यों आती

हैं? हमारा एक असीम परमेश्वर है जो हर बात में सीमा-रहित है, हमें उद्धार के लिए अगुआई देता और साथ देता है (रोमियों 1:16) और हमें हर रूकावट, चाहे वह मृत्यु की हो या कब्र की, उसका डर दूर करने के योग्य बनाता है। हमारा बड़ा डर यह होना चाहिए कि शैतान ''अनन्त विनाश'' के उलट ''अनन्त जीवन'' (यूहन्ना 5:28, 29) में जी उठने के लिए, पुनरुत्थान में, अविनाशी बनने के आशा को द्वारा उन आशिषों को नकारने के लिए हमारे साथ क्या कर सकता है (1) पतरस 5:8)।

इस ''दंग दर्रे'' में रहते हुए परमेश्वर करे कि हमारी जीवन भर की अभिलाषा ''सो जब तुम मसीह के साथ जिलाए गए, जो स्वर्गीय वस्तुओं की खोज में रहो, जहां मसीह वर्तमान है और परमेश्वर के दहिनी ओर बैठा है। पृथ्वी पर की नहीं परन्तु स्वर्गीय वस्तुओं पर ध्यान लगाओ। क्योंकि तुम तो मर गए, और तुम्हारा जीवन मसीह के साथ परमेश्वर में छिपा हुआ है। जब मसीह जो हमारा जीवन है, प्रगट होगा, तब तुम भी उसके साथ महिमा सहित प्रगट किए जाओगे'' (कुलिस्सियों 3:1-4)।

क्या आपको यह अद्‌भुत लगता है?

यूहन्ना 4:20-24
मनाए जाने में अन्तरों पर प्रश्न

ओवन डी. आल्ब्रट

कलीसिया जब तक यीशु के निर्देशों में बदलाव नहीं करती तब तक उन्हें प्रभु-भोज को मनाने में अन्तर का अधिकार है। जो लोग नई वाचा की शिक्षा को बदलते, उसमें जोड़ते या कम करते हैं वे उस सब को जिसकी यीशु ने आज्ञा दी है न मानकर उसकी आज्ञा तोड़ते हैं (मत्ती 28:20)।

बहालों की लहर के आरंभ में अधिकतर मण्डलियां प्रभु-भोज में दाखरस का इस्तेमाल करती हैं। 19वीं शताबदी के अन्त में संयम की लहर ने पूरे अमेरिका में अपना प्रभाव डाल दिया था। तब से अमेरिका की अधिकतर मण्डलियों में अंगूर का रस इस्तेमाल किया जाता है।

इसके अलावा बहाली के उन आरंभिक वर्षों के दौरान मसीह की कलीसियाओं में अधिकतर केवल एक ही कटोरे का इस्तेमाल होता था। बड़ी मण्डलियां दो कटोरों का इस्तेमाल करने लगी, जिसमें एक कटोरा मण्डली को देने के लिए और दूसरा उस कटोरे के खाली होने पर उसे भरने के लिए इस्तेमाल होता था। बेथनी, बर्जिनिया (अब पश्चमी बर्जिनिया) में मसीह की कलीसिया जहां थॉमस और अलैग्जैंडर कैम्पबेल प्रचार करते थे, दाख का रस बांटने के लिए दो कांस्य के कटोरों का इस्तेमाल करती थीं। एक कटोरा सभागार के पुरुषों वाली साइड के लिए और दूसरा स्त्रियों की साइड के लिए होता था। स्त्रियां उन पुरुषों के झूठे बर्तन में से नहीं पीना चाहती थी जो तम्बाकू लेते थे।

बहुत से कटोरों का चलन आरंभ हो गया क्योंकि 19वीं शताब्दी में टीबी रोग के

खतरनाक प्रभाव से कलीसियाओं को थाली में छोटे-छोटे कपों में देने वाले एक एक कप का इस्तेमाल शुरू करना पड़ा। टीबी होने के खतरे के बावजूद कुछ मण्डलियों ने इस विश्वास से कि परमेश्वर उन्हें बीमार होने से बचाएगा केवल एक कटोरे का इस्तेमाल जारी रखा।

केवल एक कटोरे में से क्यों?: यीशु ने कहा कि यह कटोरा तुम्हारे लिए बहाया जाता है (लूका 22:20)। यूनानी भाषा की व्याकरण के अनुसार, "बहाया" जाने वाला "कटोरा" था न कि उसमें का सामान जो यीशु के लहू का प्रतीक है। व्याकरण के अनुसार ("जो बहाया जाता है") ("कटोरा") के साथ चलने वाला वाक्यांश है परन्तु अर्थविज्ञान के अनुसार यह लहू की बात करता है। इस आयत में यीशु के कहने का अर्थ था कि उसका लहू क्रूस पर बहाया जाएगा, न कि वह कटोरा जिसमें से प्रेरितों ने पीना था उनके लिए बहाया जाना था।

कुरिन्थुस के नाम लिखते हुए पौलुस ने कटोरे के सामान की बात की न कि कटोरे की जब उसने कहा, "..कटोरे में से पिओ" (1 कुरिन्थियों 10:21; 25-28)। कोई मूलतया शारीरिक कटोरा नहीं पीता है। "कटोरा" अलंकार है। जब हम कहते हैं, "उसने पूरी प्लेट खा ली", तो हमारे कहने का अर्थ होता है कि किसी ने वह सारा खा लिया जो प्लेट में था न कि यह कि उसने प्लेट खा ली। एक और उदाहरण है "बच्चे ने" अपनी बोतल पी ली। बेशक इसका अर्थ यह नहीं है कि बच्चे ने वास्तव में बोतल ही पी ली, बल्कि इसका अर्थ यह है कि उसने वह दूध पी लिया जो बोतल में था।

जब यीशु ने "यह कटोरा" कहा तो वह उस कटोरे के अन्दर पड़ी चीज की बात कर रहा था जो उसके हाथ में था (लूका 22:20, 1 कुरिन्थियों 11:25)। यदि उसके कहने का अर्थ उसमें पड़ी चीज के बजाय वह समान होता तो केवल कटोरा ही होता जिसका इस्तेमाल किया जा सकता था। संसार की हर मण्डली के लिए उसी कटोरे का इस्तेमाल करना आवश्यक होता जो प्रभु-भोज को मानने के लिए यीशु ने अपने हाथ में पकड़ा था।

यहां पर "प्रभु का कटोरा" 1 कुरिन्थियों 10:21 वाले "दुष्ट आत्माओं के कटोरे" से बढ़कर एक कटोरा नहीं है। यह वाक्यांश किसी विशेष बर्तन में से पीने के लिए नहीं बल्कि उसमें पड़ी चीजें पीने से। वह कटोरा जिसमें से काफिर लोग पीते थे एक विशेष कटोरा नहीं बल्कि दुष्टात्माओं की पूजा में इस्तेमाल होने वाला पेय था। इसी प्रकार से प्रभु का कटोरा पेय है यानी कटोरे का समान जिसे पूरे संसार में सब मसीही लोगों द्वारा इस्तेमाल में लाया जाता है, न कि कटोरा।

यदि "कटोरा" कहने से यीशु का अभिप्राय दाख का रस होता न कि उसका बर्तन, तो प्रेरितों को वही पीना था। जब हम दाख के रस में पीते हैं तो हम यीशु के लहू अर्थात सुसमाचार के विवरणों में बताए गए वाचा के लहू को स्मरण करते हैं (मत्ती 26:28; मरकुस 14:24; लूका 22:20)।

पहली वाचा जिसे परमेश्वर ने इस्राएल के साथ बांधा था, पशुओं के लहू के साथ बांधी गई थी (इब्रानियों 9:18)। दाख के रस द्वारा दशार्ए गए यीशु के लहू से नई वाचा

बांधी गई थी।

प्रभु का "कटोरा" अर्थात दाख का वह रस जो कटोरों में था, हर युग के सब लोगों के लिए एक कटोरा है। जिस प्रकार से याकूब के कुएं पर पीने वालों ने (यूहन्ना 4:12) उस कुएं से पानी निकालने तक सदियों से कई बर्तनों का इस्तेमाल किया (यूहन्ना 4:12)। वैसे ही यीशु के एक कटोरे को पीने के लिए ही एक बर्तन आवश्यक है, चाहे यह एक व्यक्ति के लिए एक हो या एक मण्डली के लिए एक हो।

इसमें कोई नुकसान नहीं है यदि कोई मण्डली केवल एक बर्तन में से पीने को प्राथमिकता दे, पर एक बर्तन के इस्तेमाल की मांग और इस मामले पर फूट डालना ऐसे नियम थोपना है जो मसीह की शिक्षा में नहीं पाए जाते। यदि नये नियम में कहा गया है कि "सब एक कटोरे में से पीएं" तो केवल एक ही कटोरे का इस्तेमाल किया जाना चाहिए। बर्तनों की संख्या के संबंध में ऐसा कोई नियम नहीं है जिस कारण यह निर्णय प्रत्येक मण्डली पर छोड़ दिया जाता है।

केवल एक रोटी लेने पर क्या विचार है?: यीशु की "एक" और केवल "एक देह" है, जिसमें यीशु की सभी मण्डलियां है। इसी "एक देह" का इस्तेमाल किसी विशेष मण्डली के लिए नहीं किया गया बल्कि उसकी सभी मण्डलियों के लिए सामूहिक रूप में है। 1 कुरिन्थियों 10:16, 17 में पौलुस यह नहीं कह रहा था कि "एक रोटी" एक देह अर्थात कलीसिया द्वारा दी जाने वाली केवल एक रोटी है। इसके बजाय एक रोटी पूरे संसार में फैली मण्डलियों की उसकी एक देह द्वारा खाए जाने वाले कई टुकड़े है।

आर. सी. एच. लेंसकी ने टिप्पणी करते हुए कि "वह समस्त मसीही कलीसियाओं में सहभागिता के प्रति तथ्यों में इस्तेमाल की जाने वाली पूरी रोटी की बात कर रहा है, और इस पूरी रोटी को वह (एक रोटी) कहता है।

परमेश्वर ने कोई पसंद नहीं दी है इस कारण मण्डलियां एक या अधिक रोटियां या कटोरों का इस्तेमाल करना चुन सकती है। रोटी और दाख का रस आवश्यक है, पर एक रोटी और एक कटोरा नहीं यरूशलेम की कलीसिया के कई हजार सदस्यों (प्रेरितों 2:41; 4:4) जो सुलेमान के ओसारे में इकट्ठा होते थे (प्रेरितों 5:12) एक बर्तन से देने के लिए बहुत बड़ी रोटी और बहुत बड़ा कटोरा चाहिए था।

अधिक संभावना यह है कि जब यीशु ने प्रभु-भोज की स्थापना की तो प्रत्येक प्रेरित ने अपने अपने कटोरे में से पिया था। यह संदर्भ और फसह के दौरान अपने अपने कटोरों का इस्तेमाल करने की प्रथा पर आधारित एक सही निष्कर्ष प्रतीत होता है।

क्या सहभागिता के दौरान गाना आवश्यक है?: सहभागिता के दौरान कुछ मण्डलियां गाना गाती है। आइए हम इस प्रथा ापर दो अवलोकन करते हैं।

पहला, पौलुस ने एक समय से एक से अधिक व्यक्ति को बोलने की अनुमति नहीं दी (1 कुरिन्थियों 14:27-30)। उसने लिखा कि वे "बारी-बारी" से बोलें। चर्चा को समाप्त करते हुए, उसने लिखा, "पर सारी बातें सभ्यता और क्रमानुसार की जाए" (1 कुरिन्थियों 14:40)। मैं न केवल वक्ताओं को एक समय में एक जन को बोलने के लिए बल्कि सब बातें क्रमानुसार करने के लिए भी कहता हूं "क्रमानुसार" जिसका

अर्थ "ठहराए हुए क्रम" में एक के बाद एक "क्रम में" की जाने वाली गतिविधियां है न कि एक ही समय में दोनों के लिए। हमारी आराधना क्रमानुसार होनी चाहिए। क्रमानुसार किए जाने वाले काम का उद्देश्य किसी गतिविधि को रूकावट पढ़ने से बचाना था। कोई व्यक्ति किसी दूसरे व्यक्ति पर प्रचार करते हुए जोर-जोर से प्रार्थना करने लगे तो दूसरे सदस्यों को प्रार्थना करने या प्रवचन पर ध्यान लगाने में कठिनाई आती होगी।

दूसरा, सहभागिता के दौरान गीत गाना व्यक्तिगत मनन में रूकावट डालता है। आराधक के लिए एक ही समय में गीत के बोलों पर और यीशु के साथ व्यक्तिगत संबंध पर ध्यान लगाना कठिन हो सकता है। भोज के साथ गाने के बजाय गीत उसके पहले या बाद में होना चाहिए।

रोटी और दाखरस दिए जाने के दौरान या दोनों प्रतीकों के दिए जाने से पहले एक प्रार्थना करने का कोई बाइबल सम्बन्धित संकेत या निर्देश नहीं है। यीशु के नमूने का पालन करने और दो प्रार्थनाएं करना सुरक्षित ढंग है जिसमें एक प्रार्थना रोटी दिए जाने से पहले और दूसरी दाखरस दिए जाने से पहले हो और खाने और पीने के समय उसकी मृत्यु पर ध्यान किया जाए।

"प्रीत-भोज" होना चाहिए या नहीं?: पवित्र शास्त्र में "प्रीत-भोज" का एकमात्र हवाला यहूदा 12 में मिलता है। नये नियम में ऐसी कोई जानकारी नहीं दी गई है कि यह कैसे कब या कहां लिया जाता था। दूसरी शताब्दी के लेखकों ने लिखा है, पहली सदी के मसीही लोग रविवार सुबह प्रभु-भोज लेते थे, जो आमतौर पर काम पर जाने से पहले होता था, फिर वे इकट्ठे खाना खाने के लिए शाम को इक्ट्ठा होते थे।

दिन में बाद में होने वाला इक्ट्ठा, जो शाम को होता होगा, रात्रि-भोज के लिए होता था। यह खाना संभवतया "प्रीत-भोज" था जिसे दिन के मुख्य भोजन के समय शाम को लिया जाता था।

इस खाने के संदर्भ में प्रभु-भोज के लिए कोई स्थान नहीं है। और टरटोरियन का दूसरा प्रमाण इस समय प्रीत-भोज के भाग के रूप में प्रभु-भोज के अभी भी विरूद्ध है।

एवरट फग्र्यूसन ने लिखा है कि कलीसिया के इतिहास के आरंभ से, मसीही लोग सामान्य भोजन के साथ-साथ प्रभु-भोज लेते होंगे। "डिडेक वाला यूखरिस्त एक सामाजिक भोजन के संदर्भ से मेल खाता लगता है। यह कलीसिया के आरंभिक दिनों में सामान्य स्थिति हो सकती है।"

फिलिप्प सैफ ने भी यही विचार दिया है:

पहले तो भोज को प्रीत-भोज से जोड़ा गया था और फिर यह अपने चेलों के साथ यीशु के अंतिम स्मरण में शाम को दिया जाता था। पर इतनी जल्दी से दूसरी सदी के आरंभ में यह दोनों बातें अलग हो गई थी, और सहभागिता को सुबह के समय कर दिया गया और प्रीत-भोज को शाम को।

न तो फ्रग्यूसन ने और न ही शैफ ने कोई दस्तावेज दिया है कि प्रेरितों, या परमेश्वर की प्रेरणा पाए किसी और व्यक्ति ने प्रभु-भोज और प्रीत-भोज दोनों को एक ही समय और एक ही स्थान पर दिए जाने की अनुमति दी थी। पौलुस ने समझाया कि प्रभु-भोज

में और भोजन में स्पष्ट अन्तर किया जाना आवश्यक है (1 कुरिन्थियों 11:20-26, 33, 34), जिसका अर्थ यह होगा कि प्रभु-भोज के साथ सामान्य भोजन खाने का विचार परमेश्वर की ओर से नहीं बल्कि मनुष्य की ओर से होना था।

कुरिन्थुस के लोगों के लिए पौलुस के निर्देश से स्पष्ट पता चलता है कि प्रभु-भोज को सामान्य भोजन से पूरी तरह से अलग किया जाना था। उसने लिखा कि मसीही लोग अपना खाना घर में खाएं, न कि प्रभु-भोज के साथ। "क्या खाने पीने के लिए तुम्हारे घर नहीं? या परमेश्वर की कलीसिया को तुच्छ जानते हो, और जिन के पास नहीं है उन्हें लज्जित करते हो?" (1 कुरिन्थियों 11:22क); यदि कोई भूखा हो, तो अपने घर में खा ले जिससे तुम्हारा इकट्ठा होना दण्ड का कारण न हो" (1 कुरिन्थियों 11:34क)।

ट्राजन के नाम छोटे प्लाइनी के पत्र में कहा गया कि मसीही लोग पहले सुबह-सुबह आराधना करते थे, फिर वे शाम को सामान्य भोज के लिए इकट्ठा होते थे। "...मसीही लोग सूर्योदय के समय एक ठहराए हुए दिन (रविवार) को इकट्ठा होते। ....उसके बाद (शाम को) वे फिर से सामान्य और बेदाग भोजन खाने के लिए इकट्ठा होते थे।"

पहली सदी के दौरान यदि भोज और प्रीत-भोज एक ही दिन लिए जाते थे, तो उस दिन के एक ही समय पर नहीं खाए जाते थे। मसीही लोगों के लिए प्रभु-भोज के साथ प्रीत-भोज खाने का कोई निर्देश नहीं दिया गया। सामान्य भोजन या प्रीत-भोज को इसके साथ मिलाना गलत है।

प्रभु-भोज की स्थापना चाहे फसह के भोज के बाद की गई, पर यह इस बात को साबित नहीं करता था कि यीशु ने इसके संबंध में सामान्य भोजन की इच्छा की। फसह वाचा का भोजन नहीं है बल्कि यादगारी का भोजन है।

आई. होवर्ड मार्शल ने यहूदी किदुश, या आशीष का भोजन का ध्यान दिलाया है: फिर यह सुझाव दिया जाता है कि ऐसा भोजन प्रभु-भोज के नमूने के लिए दिया गया। परन्तु विभिन्न विद्वानों द्वारा यह जोर दिया गया है कि ऐसा कोई प्रमाण नहीं है कि यहूदी धर्म में ऐसा खाना हो जो किसी भी प्रकार से सामान्य यहूदी खानों से अलग हो, और अंतिम भोज की मुख्य विशेषताओं के आरंभ की यह व्याख्या चर्चा से निकाल दी जानी चाहिए।

पर यह शिक्षा कि यीशु का भोज एक (आशीष) का भोजन था असम्भव है क्योंकि सब्त या पर्व के दिन से ठीक पहले आम यहूदी भोजन के अलावा किदुश भोजन जैसी कुछ बात नहीं थी, और सब्त वाला किदुश हमारी गणना के अनुसार शुक्रवार शाम को पड़ता था, जबकि यीशु ने अपना भोज गुरुवार शाम को ठहराया। पर्व के सामान्य भोज से पूर्व शाम को एक विशेष फसह के किदुश की शिक्षा भी एक कल्पना है।

यरूशलेम की कलीसिया मण्डली के रूप में शायद सुलैमान के ओसारे में मंदिर में इक्ट्ठा होती थी (2:46क; 5:12ख)। "रोटी तोड़ने" और "घर पर रोटी तोड़ने" (प्रेरितों 2:42, 46ख) में लौलीन रहे। "रोटी तोड़ने के शब्द आराधना सभाओं में शिक्षा, संगति और प्रार्थनाओं के संबंध के बीच में मिलते हैं। इसलिए हम इस शब्द का अर्थ

पवित्र सहिभागिता के मानने के लिए एक आरंभिक विवरण के रूप में समझते हैं।"

मण्डली अपने सामान्य भोजन अपने घरों में खाती थी, न कि प्रभु-भोज के साथ। "यरूशलेम में, विश्वासी लोग प्रतिदिन अपने भोजन का आनन्द लेते थे (आयात 46क), जैसा यूनानी भाषा में लूका संकेत देता है कि इसी प्रकार हमें भी प्रभु-भोज के मनाए जाने से सामान्य भोजन को अलग करना चाहिए।" प्रमाण पक्का है कि प्रभु की देह, यरूशलेम की कलीसिया की पहली मण्डली सामान्य भोजन या प्रीत-भोज को प्रभु-भोज के साथ नहीं मिलाती थी।

प्रभु-भोज के सम्बंध में पांव धोने पर क्या विचार है?: कुछ लोग प्रभु-भोज के साथ पांव धोने को जोड़ देते हैं। पांव धोना एक धार्मिक समारोह नहीं बल्कि गंदे पांव साफ करने के उद्देश्य से विनम्रतापूर्वक सेवा को दिखाना था। सचमुच की विधवा जिसे कलीसिया की ओर से सहायता मिल सकती थी, उसने अन्य सेवाओं के अलावा लोगों के पांव भी धोने होते थे (1 तीमुथियुस 5:10)। यह आराधना का नहीं बल्कि विनम्र सेवा और अतिथि सत्कार का एक कार्य था।

यदि पांव धोना आराधना के भाग के रूप में किया जाना आवश्यक है तो नियम यह बताने में नाकाम है कि इसे कौन, कैसे और कब कर सकता है। इस नाकामी का अर्थ यह होगा कि यीशु के मन में आराधना की बात नहीं बल्कि दीन सेवा का नमूना होगा।

यीशु ने यह नहीं कहा, "मैंने तुम्हें नमूना दे दिया है कि तुम भी वही करो जो मैंने किया है, "बल्कि जैसा "इस प्रकार से" मैंने (किया है) (यूहन्ना 13:15)। वह अपने चेलों को दूसरों की सेवा वैसे ही करनी सिखा रहा था। जैसे उसने उनके पांव धोकर विनम्रता से उनकी सेवा की, जिसमें पांव धोना भी हो सकता है, पर यह यहीं तक सीमित है।

मसीह में माफ़ी

हेन्स जे. डैडर्शेक

क्षमा की परिभाषा ''कर्ज माफ़ करना, छोड़ देना, कम करना'' के रूप में की जाती है (भजन 32:1; मत्ती 9:2; लूका 7:48)। पापों की क्षमा की बात करने पर हमें ''ये पाप हम पर न लगने दे'' की बात भी करनी आवश्यक है (गिनती 12:11)।

इस प्रकार क्षमा को प्रभु के कार्य के रूप में देखा जाता है जो मनुष्य के आज्ञा न मानने से, जिससे सर्वशक्तिमान परमेश्वर को बहुत चिड़ है और जो मनुष्य के लिए बहुत कष्टदायक है, परमेश्वर के नियमों को तोड़ने से उत्पन्न दुखद परिस्थिति में ले जाता है। पाप पवित्र परमेश्वर और मनुष्य के बीच के वास्तविक संबंध को नष्ट कर देता है। मनुष्य अपने आप में पापों की क्षमा को पाने के लिए अधिक कुछ नहीं कर सकता। परमेश्वर ही है जो अपनी पूरी सामर्थ से कार्य करता है। अपनी करूणा और धीरज में वह उस दण्ड को देने से इंकार करता है जिसका मनुष्य हकदार है और वह मनुष्य को दण्ड विराम दे देता है।

नये नियम में जोर दिया गया है कि क्षमा को कमाया नहीं जा सकता। मत्ती 18:23-35 परमेश्वर हमें पापों की क्षमा करने का एक बेहतरीन नमूना देता है। पापी मनुष्य परमेश्वर के सामने अपने आप फिर से रह पाने के अयोग्य है। मनुष्य स्वयं अपना उद्धार नहीं कर सकता (मरकुस 10:26, 27)।

परमेश्वर मनुष्य से प्रेम करता है और यदि यह परमेश्वर के अनुग्रह के द्वारा पाप की क्षमा प्राप्त करने के लिए उसकी शर्तों को पूरा करे तो वह उसके अपराध क्षमा करना चाहता है। ''तेरे पाप क्षमा हुए'' (मरकुस 2:5)। मनुष्य के विश्वास, मन फिराव, विश्वास के अंगीकार और पानी में बपतिस्मा लेने की परमेश्वर की शर्तों को मान लेने पर मनुष्यों को परमेश्वर की ओर से मुफ्त वरदान का शुभ समाचार पापों की क्षमा है (प्रेरितों 2:38. रोमियों 6:1-10)। परमेश्वर पिता मनुष्य की घर वापसी की राह देख रहा है (लूका 15:11-29)। मनुष्य के नालायक होने के बावजूद परमेश्वर की करूणा उसे परमेश्वर के पास लौटना संभव बना देती है। पिता के घर और जीवन में उसका लौट आना पाप में गिरे मनुष्य की बहाली को संभव बनाता है।

पापों की क्षमा और जीवन की बहाली परमेश्वर के पुत्र यीशु मसीह के बिना असंभव थी। केवल मसीह के पास ही पाप क्षमा करने की सामर्थ है। मसीह की मृत्यु को छुटकारे के कार्य के रूप में दिखाया जाता है जो क्षमा को संभव बना देता है। यीशु ने कहा ''क्योंकि मनुष्य का पुत्र इसलिये नहीं आया कि उसकी सेवा टहल की जाए, पर इसलिये आया कि आप सेवा टहल करे, और बहुतों की छुड़ौती के लिये अपना प्राण दे'' (मरकुस 10:45)। पापों की क्षमा देकर केवल यीशु मसीह ही आत्मिक जीवन को बहाल कर सकता है। उसे धन्यवाद दें कि पवित्र आत्मा के विरूद्ध किए जाने वाले पाप को छोड़कर हर पाप क्षमा किया जाएगा।

जब हम मसीह की कलीसिया को देखते हैं तो हम पाते हैं कि पापों की क्षमा का संबंध मसीह और मसीही जीवन के साथ है। इस अनुग्रह का महत्व विशेषकर बपतिस्मे में है। ''पतरस ने उनसे कहा, 'मन फिराओ, और तुम में से हर एक अपने-अपने पापों की क्षमा के लिये यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले. तो तुम पवित्र आत्मा का दान पाओगे'' ''(प्रेरितों 2:38)'' और यरूशलेम से लेकर सब जातियों में मन फिराव का और पापों की क्षमा का प्रचार, उसी के नाम से किया जाएगा'' (लूका 24:47)।

पौलुस ने कहा, ''अत: उस (यानी यीशु मसीह) का बपतिस्मा पाने से हम उसके साथ गाड़े गए.... हम जानते हैं कि हमारा पुराना मनुष्यत्व उसके साथ क्रूस पर चढ़ाया गया ताकि पाप का शरीर व्यर्थ हो जाए और हम आगे को पाप के दास्तव में न रहें'' (रोमियों 6:1-10)।

मसीही लोगों के लिए आवश्यक है कि वे अपने साथ बुरा करने वालों को क्षमा करें। मसीही समाज का असली माहौल पापों की पक्की क्षमा वाला माहौल है। दूसरों को उनके अपराध क्षमा किए बिना परमेश्वर को प्रसन्न करना अनहोना है (मत्ती 6:12-14; 18:21-35, मरकुस 11:25)। ''इसलिए यदि तुम मनुष्य के अपराध क्षमा करोगे तो तुम्हारा स्वर्गीय पिता भी तुम्हें क्षमा करेगा। और यदि तुम मनुष्य के अपराध क्षमा न करोगे, तो तुम्हारा पिता भी तुम्हारे अपराध क्षमा न करेगा।''

अपने साथियों के पाप क्षमा किए बिना परमेश्वर की क्षमा के साथ रहना नामुमकिन है। इस कारण मसीह की कलीसिया के लिए क्षमा केवल कल की बात नहीं। यह परमेश्वर का सजीव कार्य है, जिसका पता मनुष्य को क्षमा में चलता है और जो बिना रूके उसके लिए भविष्य का मार्ग खोलता है।

''जिसमें हमें छुटकारा अर्थात पापों की क्षमा प्राप्त होती है'' (कुलुस्सियों 1:14)। ''हम को उसमें उसके लहू के द्वारा छुटकारा अर्थात अपराधों की क्षमा उसके अनुग्रह के धन से मिला है जिसे उसने सारे ज्ञान और समझ सहित हम पर बहुतायत से किया'' (इफिसियां 1:7, 8)। जिस प्रकार से परमेश्वर मसीह में हमारे पापों को क्षमा करता है उसी प्रकार से हमें भी अपने साथियों को क्षमा करना आवश्यक है। सच्चे दिल से पाप क्षमा किए बिना मसीही समाज की कल्पना करना नामुमकिन है।

यीशु का बपतिस्मा

इससे पहले कि यीशु परमेश्वर के राज्य का सुसमाचार सुनाना आरंभ करता उसने बपतिस्मा लिया था। सुसमाचार की चारों पुस्तकों में यीशु के बपतिस्में का उल्लेख है। इस संबंध में हम यहां मत्ती 3:13-17 पर विचार करेंगे।

सबसे पहली बात हम यह देखते हैं कि यीशु स्वयं यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के पास आया ताकि वह उसे बपतिस्मा दे सके। परन्तु क्यों?

मत्ती 3:15 में यीशु ने यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले से कहा था, ''अब तो ऐसा ही होने दे, क्योंकि हमें इसी रति से सब धार्मिकता को पूरा करना उचित है।'' भजन 119:172 में दाऊद ने कहा था, ''तेरी सब आज्ञाएं धर्ममय है।'' यीशु ने अपने पिता की इच्छा को पूरा करने के लिए बपतिस्मा लिया था। इसी बात पर जोर देते हुए यूहन्ना 6:38 में यीशु ने कहा था ''क्योंकि मैं अपनी इच्छा नहीं वरन अपने भेजने वाले की इच्छा पूरी करने के लिए स्वर्ग से उतरा हूं।'' यीशु ने इसलिए भी बपतिस्मा लिया था ताकि वह अन्य सब लोगों के लिए एक नमूना दे सके। पौलुस ने थिस्सलुनीके के लोगों के विषय में कहा था कि वे ''..वचन को मानकर हमारी ओर प्रभु की सी चाल चलने लगे'' (1 थिस्सलुनीकियों 1:6)। यदि वह प्रभु का अनुसरण कर रहे थे तो उन्होंने बपतिस्मा भी अवश्य लिया होगा। यीशु ने पिता परमेश्वर की आज्ञाओं को माना और हमें सिखाया कि परमेश्वर की हर आज्ञा को मानना हमारा कर्त्तव्य है। उसने यूहन्ना 9:4 में कहा, ''जिसने मुझे भेजा है, हमें उसके काम दिन ही दिन में करना अवश्य है।।'

यीशु ने इस बात का उदाहरण भी हमारे सामने रखा कि जिन बातों को वह सिखाता था उन्हें स्वयं भी मानता था। यूहन्ना 3:5 में उसने कहा था, ''मैं तुझ से सच कहता हूं, जब तक कोई मनुष्य जल और आत्मा से न जन्मे तो वह परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता।'' इसी प्रकार मरकुस 16:16 में

यीशु ने कहा था कि ''जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा, परन्तु जो विश्वास न करेगा वह दोषी ठहराया जाएगा।''

यीशु ने अपने मसीह होने को प्रकट करने के लिए ही बपतिस्मा लिया था। यूहन्ना 1:21 में हम पढ़ते हैं कि यूहन्ना बपतिस्मा लेने वाले ने इस प्रकार से कहा था, ''तो फिर कौन है? क्या तू एलिय्याह है?' उसने कहा, मैं नहीं हूं।' तो क्या तू वह भविष्यद्वक्ता है? उसने उत्तर दिया नहीं। और अपने पिता को प्रसन्न करने के लिए भी यीशु ने बपतिस्मा लिया। क्योंकि मत्ती 3:17 में हम ऐसा पढ़ते हैं कि जैसे ही यीशु बपतिस्मा लेकर पानी में से ऊपर आया तो यह आकाशवाणी हुई कि ''यह मेरा प्रिय पुत्र है, जिससे मैं प्रसन्न हूं।'' क्या आपने कभी इस पर गंभीरता से विचार किया है कि परमेश्वर ने यीशु को बपतिस्मा लेने के बाद ही अपना पुत्र क्यों घोषित किया? इसमें अवश्य ही कोई विशेष बात होनी चाहिए।

अब यीशु के बपतिस्मे के विषय में इस पाठ में हम कुछ और बातों पर विचार करते हैं। सबसे पहली बात हम यह देखते हैं कि जो बपतिस्मा यूहन्ना क्रूस पर यीशु की मृत्यु होने से पहले देता था, उसे लेने से पहले मसीह पर विश्वास लाने के लिए कहा जाता था। प्रेरितों 19:4 में हम पढ़ते हैं कि यूहन्ना ने यह कहते हुए मन फिराव का बपतिस्मा लिया कि जो मेरे बाद आने वाला है, उस पर यानी यीशु पर विश्वास लाना। इसी प्रकार से आज भी हम जब यीशु का बपतिस्मा लेते हैं। बपतिस्मा लेने से पहले यीशु पर विश्वास लाना आवश्यक है, क्योंकि मरकुस 16:16 कहता है कि ''विश्वास करे और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा।''

यूहन्ना के बपतिस्मे के संबंध में दूसरी बात हमें यह मिलती है कि बपतिस्मा लेने से पहले मन फिराना आवश्यक था। मत्ती 3:8 बताता है कि जब यूहन्ना ने लोगों को बपतिस्मा लेने के लिए अपने पास आते देखा तो उसने उनसे कहा था कि ''मन फिराव के योग्य फल लाओ। आज भी बपतिस्मा लेने से पहले मन फिराना आवश्यक, है, जैसे कि पतरस ने प्रेरितों 2:38 में लोगों से कहा था, ''मन फिराओ और तुम में से हर एक अपने-अपने पापों की क्षमा के लिए यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले, तो तुम पवित्र आत्मा का दान पाओगे।''

तीसरी बात यूहन्ना के बपतिस्मे के संबंध में हम यह देखते हैं कि बपतिस्मा लिए जाने से पहले अंगीकार करना आवश्यक था। मत्ती 3:6 बताता है कि उन्होंने अपने अपने पापों को मानकर यरदन नदी में उससे बपतिस्मा लिया। अब आज भी जब लोग मसीह का बपतिस्मा लेते हैं तो बपतिस्मा लेने से पहले उन्हें अंगीकार करना आवश्यक है। बेशक यह अंगीकार अपने पापों का नहीं बल्कि इस बात का है कि मसीह परमेश्वर का पुत्र है। क्योंकि यदि तू अपने मुंह से यीशु को प्रभु जानकर अंगीकार करे और अपने मन से विश्वास करे, कि परमेश्वर ने

उसे मरे हुओं में से जिलाया, तो तू निश्चय उद्धार पाएगा। क्योंकि धार्मिकता के लिए मन से विश्वास किया जाता है, और उद्धार के लिए मुंह से अंगीकार किया जाता है'' (रोमियों 10:9, 10)। खोजे के मनपरिवर्तन के संबंध में हम पढ़ते हैं कि ''मार्ग में चलते-चलते वे किसी जल की जगह पहुंचे तब खोजे ने कहा, देख यहां जल है, अब मुझे बपतिस्मा लेने में क्या रोक है? फिलिप्पुस ने कहा, यदि तू सारे मन से विश्वास करता है तो हो सकता है उसने उत्तर दिया मैं विश्वास करता हूं कि यीशु मसीह परमेश्वर का पुत्र है। तब उसने रथ खड़ा करने की आज्ञा दी, और फिलिप्पुस और खोजा दोनों जल में उतर पड़े, और उसने उसे बपतिस्मा दिया'' (प्रेरितों 8:36-38)।

चौथी बात हम देखते है कि यूहन्ना का बपतिस्मा पापों की क्षमा के लिए था मरकुस 1:4 बताता है, ''यूहन्ना आया, जो जंगल में बपतिस्मा देता, और पापों की क्षमा के लिये मनफिराव के बपतिस्मा का प्रचार करता था।'' आज क्रूस पर यीशु की मृत्यु के बाद भी परमेश्वर की योजना में कोई बदलाव नहीं आया है, क्योंकि प्रेरितों 22:16 में हम पढ़ते हैं कि हनन्याह ने शाऊल के पास जाकर उससे कहा था कि ''अब क्यों देर करता है? उठ , बपतिस्मा ले, और उसका नाम लेकर पापों को धो डाल।''

अन्त में हम देखते हैं कि यूहन्ना जो बपतिस्मा यीशु की मृत्यु से पहले देता था और जो बपतिस्मा उसकी मृत्यु के बाद उसके चेले देते थे, दोनों में अन्तर था। इस संबंध में हम देखते हैं कि यूहन्ना का बपतिस्मा लेने से पवित्र आत्मा का दान नहीं मिलता था, परन्तु मसीह का बपतिस्मा लेने से मिलता था (प्रेरितों 2:38)। यूहन्ना का बपतिस्मा किसी भी नाम से नहीं दिया जाता था। परन्तु मसीह का बपतिस्मा मसीह के नाम में दिया जाता था (मत्ती 28:19; प्रेरितों 2:38)। यूहन्ना का बपतिस्मा इसलिए दिया जाता था ताकि लोग वह बपतिस्मा लेकर अपने आपको आने वाले राज्य में प्रवेश के लिए तैयार कर सकें। लूका 1:17 यूहन्ना के विषय में कहता है कि वह ''प्रभु के लिए एक योग्य प्रजा तैयार'' करने के लिए था। परन्तु मसीह की मृत्यु के बाद अब उसका बपतिस्मा लेकर लोग उसके राज्य में अर्थात उसकी कलीसिया में आते जाएं (यूहन्ना 3:5. प्रेरितों 2:38; 41, 47; 1 कुरिन्थियों 12:13; गलातियों 3:37)।